भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर 452001
Khandwa Road, Indore-452001

फ़ाइल् क्रमांक **F.No. :** टेक **10-6/2024** दिनांक **Date: 02.05.2024**

YouTube channel: https://www.youtube.com/channel/UCNdY5AsfPZqsCO8IxkAuSyQ
Facebook Page: https://www.facebook.com/ICAR-Indian-Institute-of-Soybean-Research-Indore-507415769433553
Twitter: @IisrIcar **Whatsapp & Telegram: IISR Soy Farmers**

सोया कृषकों के लिए बोवनी पूर्व सलाह / Pre Sowing Advisory for Soybean Farmers

(मई 2024/ May 2024)

1	**महत्वपूर्ण सलाह**: सोयाबीन फसल के लिए 3 वर्षों में एक बार खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना उत्पादन स्थिरता एवं आर्थिक की दृष्टि से लाभकारी होता हैं. इसी प्रकार एकल किस्म की खेती के स्थान पर न्यूनतम 2-3 किस्मों की खेती करने में जोखिम कम होती हैं. अतः कृषकगण यथासंभव ध्यान दे. **Important advice**: Considering the yield stability and economic profitability, it is advised to carry deep summer ploughing only once in 3 years. Similarly, cultivation of 2-3 soybean varieties reduces the risk in uncertain yield due to biotic and abiotic factors. Therefore, farmers are advised to keep this in mind.	
2	**खेत की तय्यारी**: कृषकों को सलाह हैं कि 3 वर्षों में एक बार अपने खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें और विपरीत दिशाओं में दो बार कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें. विगत वर्षों में गहरी जुताई किये जाने पर केवल विपरीत दिशाओं में कल्टीवेटर (बखरनी) एवं पाटा चलाकर खेत तैयार करने की सलाह हैं. **Seed Bed Preparation**: Farmers are advised to apply deep summer ploughing once in 3 years. After this, the field should be prepared using criss-cross harrowing followed by planking. If this was done in the past 3 years, two criss-cross cultivation followed by planking is sufficient for seed bed preparation.	
3	**कार्बनिक खाद का प्रयोग**: पोषण प्रबंधन के लिए, अंतिम बखरनी से पूर्व गोबर की खाद (5-10 टन/हे) या मुर्गी की खाद (2.5 टन/हे) को खेत में फैलाकर अछि तरह मिला दे. **Use of Organic Manure**: Apply well-decomposed FYM @ 5-10 t/ha or Poultry Manure @ 2.5 t/ha before the last harrowing.	

4	**वर्षाजल के समुचित उपयोग हेतु सब सोइलर का प्रयोग** : संभव होने पर 5 वर्ष में एक बार अपनी सुविधा अनुसार अंतिम बखरनी से पूर्व 10 मीटर के अंतराल पर सब-सोइलर चलाये, जिससे वर्षाजल खेत की गहरी सतह तक जा सकें और सूखे की अनपेक्षित स्थिति फसल को नमी मिलती रहे. साथ ही इससे मिटटी की कठोर परत तोड़ने में तथा नमी का संचार अधिक समय तक रखने में सहायता मिलती हैं. As per suitability, farmers are advised to run the sub-soiler machine once in five years, at an interval of 10 m which facilitates the breaking of hard soil pan thereby increasing the rainwater infiltration and helps in case of drought.	
5	**किस्मों का चयन**: अपने जलवायु क्षेत्र के लिए अनुकूल विभिन्न समयावधि में पक्केवाली न्यूनतम 2-3 नोटिफाइड सोयाबीन की किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता सुनिश्चित करें. ऐसे किसान जो सोयाबीन के बाद आलू, प्याज, लहसुन जैसी फसल लेकर गेहूं/चना लगते हो, सोयाबीन की शीघ्र समयावधि वाली किस्म को लगाये. उसी प्रकार वर्ष में केवल दो फसलें लेने वाले कृषक मध्यम/अधिक समय परिपक्वता अवधि वाली किस्मों का चयन करें.	
	Choice of cultivars: Select 2-3 soybean varieties recommended for your area and ensure the availability of seed. Farmers who grows three crops in succession (Soybean : Potato/Garlic/Onion : Wheat/Chickpea for example) are advised to select short duration soybean varieties. Similarly those who are able to take only one succeeding crop after soybean (Wheat/Chickpea) are advised to select medium/long duration soybean varieties for ensuring maximum soybean yield.	
6	**अंकुरण परिक्षण**: बीज की गुणवत्ता (न्यूनतम 70% अंकुरण) एवं बीज दर निर्धारण हेतु उपलब्ध बीज का अंकुरण परिक्षण करें. **Germination Test**: Ensure the seed quality (minimum 70% germination) by carrying out germination test of the available soybean seed.	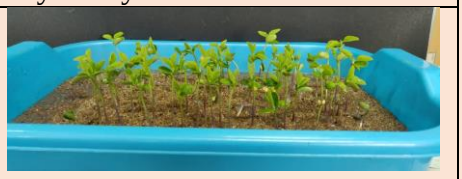
7	**बोवनी की दुरी**: उत्पादन की दृष्टि से प्रति हेक्टेयर पौध संख्या अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु हैं. अतः सोयाबीन फसल के लिए अनुशंसित 45 सेमी कतारों पर तथा 5-10 सेमी पौधों की दूरी पर बोवनी करें. **Spacing:** This is very important parameter to have optimum plant population. The recommended row-to-row spacing for soybean is 45 cm at 5-10 cm plant to plant distance.	
8	**बीज दर**: सोयाबीन में बड़े आकार के बीज की तुलना में छोटे या माध्यम आकार के बीज की अंकुरण क्षमता अधिक होती हैं. अतः न्यूनतम 70% बीज अंकुरण, बीज का आकार एवं अनुशंसित दुरी को ध्यान में रखकर 60-75 किग्रा/हे. बीज दर अपनाना उत्पादन एवं आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होगा.	
	Seed Rate: In soybean, the germinability of small/medium seed size is invariably higher than the bold seeded soybean varieties. Therefore, the seed rate of only 60-75 kg/ha will be economically viable for the seed having good germination.	

9	**बोवनी की विधि** : कृषकों को सलाह हैं कि जहाँ तक संभव हो सोयाबीन की बोवनी बी.बी.एफ (चौड़ी क्यारी प्रणाली) या (रिज-फरो पद्धति) कुड-मेड-प्रणाली से करें. Farmers are advised to follow Broad Bed Furrow (BBF) or Ridge & Furrow methods for sowing.	
10	**मशीनीकरण**: सोयाबीन की खेती के लिए उपयोगी अन्य यन्त्र (सीड ड्रिल, स्प्रेयर, आदि) की मरम्मत कर समय पर उपयोग योग्य रखे. Mechanization: Carry out need based servicing/repair-maintenance of agricultural equipment/implements well in advance.	
11	**आदान उपलब्धता**: सोयाबीन की खेती के लिए आवश्यक आदान (बीज, खाद-उर्वरक, फफूंदनाशक, कीटनाशक, खरपतवारनाशक , जैविक कल्चर आदि) का क्रय एवं उपलब्धता सुनिश्चित करें. Ensure availability of other critical inputs like fertilizers, weedicides, fungicides, and cultures for seed treatment etc.	

……..